ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

24 October 2024

छठी भारत–सिंगापुर रक्षा मंत्री वार्ता

संदर्भ: हाल ही में भारत और सिंगापुर के बीच रक्षा मंत्रियों की छठी वार्ता का आयोजन हुआ, जिसकी सह-अध्यक्षता भारतीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और सिंगापुर के रक्षा मंत्री डॉ. एनजी इंग हेन ने की। यह बैठक भारत-सिंगापुर के बीच रक्षा संबंधों के बढ़ते महत्व को रेखांकित करती है और उनकी व्यापक रणनीतिक साझेदारी को मजबूत बनाती है।

बैठक के मुख्य बिंदु:

- **रक्षा सहयोग में वृद्धि:** भारत और सिंगापुर ने रक्षा उपकरणों के सह-विकास और सह-उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने रक्षा संबंधों को और गहरा करने का संकल्प लिया है। यह सहयोगात्मक दृष्टिकोण न केवल सैन्य संबंधों को मजबूत करेगा, बल्कि तकनीकी नवाचार को भी प्रोत्साहित करेगा।
- **संयुक्त सैन्य प्रशिक्षणों का विस्तार:** बैठक में संयुक्त सैन्य प्रशिक्षणों के विस्तार पर चर्चा हुई। प्रशिक्षण क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों से निपटने में अंतर-संचालन और तैयारी को महत्वपूर्ण बनाते है। नियमित संयुक्त अभ्यास इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
- **क्षेत्रीय सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता:** वार्ता में क्षेत्रीय शांति, स्थिरता और सुरक्षा के प्रति दोनों देशों की साझा प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई। भू-राजनीतिक तनावों से भरे इस दौर में, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षित और स्थिर माहौल को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के सहयोग अत्यावश्यक हैं।
- **राजनयिक संबंधों के 60 वर्ष पूरे होने का जश्न:** भविष्य में, भारत और सिंगापुर 2025 में अपने राजनयिक संबंधों के 60 वर्ष पूरे होने का उत्सव मनाने की योजना बना रहे हैं। यह उपलब्धियों का मूल्यांकन करने तथा रक्षा क्षेत्र में भविष्य के सहयोग के लिए नवीन लक्ष्यों का निर्धारण करने का एक अनूठा अवसर प्रस्तुत करता है।

भारत–सिंगापुर रक्षा मंत्रियों की वार्ता के बारे में:

- **स्थापना:** 2016 में आरंभ हुआ भारत-सिंगापुर रक्षा मंत्रियों का संवाद द्विपक्षीय रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करता है।
- **उद्देश्य:** इस वार्ता का उद्देश्य सिंगापुर और भारत के बीच रक्षा संबंधों को मजबूत और गहरा करना है, जो उनके पारस्परिक रणनीतिक हितों और प्रतिबद्धताओं को प्रतिबिंबित करता है।

भारत–सिंगापुर संबंध के बारे में:

ऐतिहासिक संबंध:

- **संबंधो का आधार:** 1819 में सर स्टैमफोर्ड रैफल्स के द्वारा सिंगापुर ने भारत के साथ ऐतिहासिक व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंधों को स्थापित किया।
- **मान्यता:** भारत 1965 में सिंगापुर की स्वतंत्रता को मान्यता देने वाले पहले देशों में से एक था, फिर दोनों देशों में द्विपक्षीय संबंधों की शुरुआत हुई।

व्यापार और आर्थिक सहयोग:

- **द्विपक्षीय व्यापार वृद्धि:** व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (सीईसीए) के कारण, द्विपक्षीय व्यापार 2023-24 में 35.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, जिसमें भारत शुद्ध आयातक होगा।
- **कर समझौते:** 2016 में हस्ताक्षरित प्रत्यक्ष कर बचाव समझौते (डीटीएए) का उद्देश्य कर चोरी को रोकना और दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों को बढ़ाना है।

रक्षा संबंध:

- **सामरिक समुद्री क्षमता में वृद्धि:** भारत और सिंगापुर के बीच रक्षा सहयोग भारत की क्षेत्रीय सामरिक समुद्री क्षमताओं को बढ़ाता है और हिंद महासागर में सुरक्षा साझेदार के रूप में सिंगापुर की भूमिका को सुदृढ़ करता है।
- **संयुक्त अभ्यास:** प्रमुख सैन्य अभ्यासों में निम्नलिखित शामिल हैं:
  - » अभ्यास अग्नि वारियर (सेना)
  - » अभ्यास सिम्बेक्स (नौसेना)
  - » वायु सेना अभ्यास संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण (जेएमटी)

फिनटेक और बहुपक्षीय सहयोग:

- **फिनटेक का विकास:** सीमा पार फिनटेक में महत्वपूर्ण प्रगति, जैसे रुपे कार्ड और यूपीआई-पेनाउ लिंकेज, दोनों देशों के बीच आर्थिक

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

सहयोग को और सशक्त बनाते हैं।

सिंगापुर में भारतीय समुदाय:

- **जनसंख्या आँकड़े:** सिंगापुर की निवासी जनसंख्या में जातीय भारतीय लोगों की संख्या 9.1% है, तथा तमिल चार आधिकारिक भाषाओं में से एक है।
- **भारतीय नागरिक:** सिंगापुर में 1.6 मिलियन विदेशियों में से लगभग एक-पांचवां हिस्सा भारतीय नागरिक हैं, जो वहां की सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

उपग्रह स्पेक्ट्रम

सन्दर्भ: हाल ही में केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने घोषणा की कि भारत में सैटेलाइट स्पेक्ट्रम का आवंटन नीलामी के बजाय 'प्रशासनिक रूप से' किया जाएगा। यह निर्णय अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप है, जो सैटेलाइट स्पेक्ट्रम को एक वैश्विक रूप से साझा सार्वजनिक संसाधन के रूप में मान्यता देता है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU) द्वारा प्रबंधित किया जाता है।

प्रशासनिक कार्यभार के मुख्य लाभ:

- **कुशल आवंटन:** प्रशासनिक दृष्टिकोण उपग्रह स्पेक्ट्रम के इष्टतम उपयोग को सुनिश्चित करता है, जिससे संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन संभव होता है।
- **न्यायसंगत पहुंच:** यह प्रक्रिया सभी हितधारकों को निष्पक्ष पहुंच प्रदान करती है, जिससे उपग्रह संचार क्षेत्र में समावेशिता को बढ़ावा मिलता है।
- **वैश्विक संगति:** यह दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है और विभिन्न देशों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करता है।

दूरसंचार अधिनियम, 2023:

- **स्पेक्ट्रम का आवंटन सामान्यत:** नीलामी के माध्यम से किया जाता है, लेकिन सैटेलाइट स्पेक्ट्रम जैसी श्रेणियों के लिए अपवाद मौजूद हैं, जिनके लिए प्रशासनिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।
- **धारा 4(4):** उपग्रह स्पेक्ट्रम सहित कुछ प्रविष्टियों के लिए स्पेक्ट्रम आवंटन नीलामी के बिना किया जाता है।

सैटेलाइट स्पेक्ट्रम क्या है?

- यह सैटकॉम (सैटेलाइट कम्युनिकेशन) के लिए विशिष्ट रेडियो आवृत्तियों का संग्रह है, जो उपग्रहों और पृथ्वी स्टेशनों के बीच डेटा संचरण को सक्षम बनाता है।
- **प्रबंधन:** इसका प्रबंधन और आवंटन अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU) द्वारा समन्वित किया जाता है।

उपग्रह संचार के लाभ:

- **व्यापक कवरेज:** यह संचार प्रणाली उन क्षेत्रों में भी पहुंच प्रदान करती है जहां पारंपरिक बुनियादी ढांचे की कमी होती है, जैसे दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्र।
- **लचीलापन:** उपग्रह संचार प्राकृतिक आपदाओं और चरम मौसम के दौरान भी संचार को जारी रखने में सक्षम होता है, क्योंकि इसमें जमीनी घटक कम होते हैं।
- **बाजार वृद्धि की संभावना:** भारत के उपग्रह संचार क्षेत्र का अनुमान है कि 2028 तक यह 2.3 बिलियन डॉलर से बढ़कर 20 बिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा। यह वृद्धि अप्रयुक्त बाजारों और ब्रॉडबैंड की बढ़ती मांग से प्रेरित होगी।

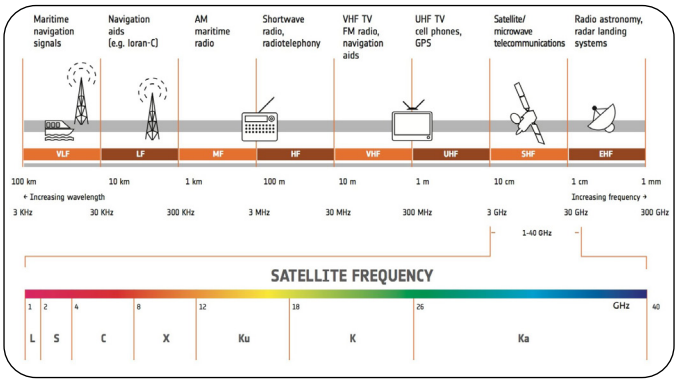

सैटेलाइट स्पेक्ट्रम की नीलामी से बचने का कारण:

अंतर्राष्ट्रीय समन्वय:

- उपग्रह स्पेक्ट्रम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई ऑपरेटरों को सेवा प्रदान करता है और इसकी कोई राष्ट्रीय सीमा नहीं होती।
- आईटीयू का समन्वय इसे नीलामी के लिए अव्यावहारिक बनाता है।

गैर-विशिष्ट प्रकृति:

- उपग्रह स्पेक्ट्रम का उपयोग कई प्रदाताओं द्वारा किया जा सकता है, जबकि स्थलीय स्पेक्ट्रम व्यक्तिगत ऑपरेटरों तक सीमित होता है।
- यह साझा उपयोग नीलामी की आवश्यकता को कम करता है।

पिछले अनुभव:

- अमेरिका, ब्राजील और सऊदी अरब जैसे देशों ने नीलामी का प्रयास किया, लेकिन जटिल प्रक्रियाओं के कारण वे प्रशासनिक आवंटन की ओर लौट आए।
- अमेरिका में आखिरी बार 2004 में नीलामी हुई थी।

विनियामक दक्षता:

- प्रशासनिक रूप से स्पेक्ट्रम आवंटन से यह प्रक्रिया अधिक कुशल और त्वरित होती है, जिससे समय पर सेवाएं उपलब्ध हो सकती हैं।
- यह विधि नीलामी जैसी जटिल प्रक्रियाओं को सरल बनाती है और उपग्रह ऑपरेटरों को बिना देरी के सेवाएं प्रदान करने में मदद करती है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू):

- आईटीयू संयुक्त राष्ट्र की सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के लिए विशेष एजेंसी है।
- इसकी स्थापना 1865 में अंतर्राष्ट्रीय टेलीग्राफ यूनियन के रूप में की गई थी।
- 1947 में आईटीयू संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी बन गई।
- यह सरकारों और निजी क्षेत्र की संस्थाओं के बीच वैश्विक दूरसंचार और ICT सेवाओं के समन्वय के लिए कार्य करता है।
- **सदस्यता:** इसमें 193 सदस्य देश हैं, साथ ही 1,000 से अधिक संगठन (कंपनियां, विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निकाय) भी शामिल हैं।

कार्य:

- वैश्विक रेडियो स्पेक्ट्रम और उपग्रह कक्षाओं का आवंटन।
- दूरसंचार और ICT से संबंधित तकनीकी मानकों का समन्वय और निर्धारण।
- वंचित समुदायों में ICT तक पहुंच में सुधार लाना।

भारत और आईटीयू:

- भारत 1869 से इसका सक्रिय सदस्य है और 1952 से आईटीयू परिषद का नियमित सदस्य रहा है।
- **मुख्यालय:** इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में स्थित है।

करतारपुर कॉरिडोर समझौता

सन्दर्भ: हाल ही में भारत और पाकिस्तान ने करतारपुर कॉरिडोर समझौते का नवीनीकरण किया है, जिससे यह सुनिश्चित हुआ है कि पाकिस्तान में स्थित करतारपुर साहिब गुरुद्वारा तक भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए यह महत्वपूर्ण संपर्क आगामी पांच वर्षों तक खुला रहेगा। यह नवीनीकरण सिख समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण है, जो उन्हें अपने सबसे प्रतिष्ठित धार्मिक स्थल तक निर्बाध पहुँच प्रदान करता है।

नवीनीकरण का मुख्य विवरण:

- **अवधि:** नवीनीकृत समझौते के तहत गलियारे का संचालन अगले पांच वर्षों के लिए, अर्थात् 2029 तक, बढ़ा दिया गया है।
- **तीर्थयात्री क्षमता:** इस गलियारे में प्रतिदिन 5,000 तीर्थयात्रियों के प्रवेश की व्यवस्था होगी, जिससे बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए आ सकेंगे।
- **सेवा शुल्क:** परिचालन लागत को पूरा करने के लिए पाकिस्तान प्रति तीर्थयात्री 20 डॉलर का नाममात्र सेवा शुल्क लेना जारी रखेगा।

पात्रता एवं आवश्यकताएँ:

- **कॉरिडोर का उपयोग कर सकते हैं:**
  - » भारतीय नागरिक।
  - » भारतीय मूल के व्यक्ति।
- **आवश्यक दस्तावेज:**
  - » सभी तीर्थयात्रियों के लिए एक वैध पासपोर्ट और एक इलेक्ट्रॉनिक यात्रा प्राधिकरण (ईटीए)।
  - » ओसीआई कार्ड धारकों के लिए उन्हें अपना ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया (ओसीआई) कार्ड प्रस्तुत करना होगा।
- **यात्रा दिशानिर्देश:**
  - » **यात्रा कार्यक्रम:** तीर्थयात्री सुबह रवाना होंगे और उन्हें उसी दिन वापस लौटना होगा।
  - » **यात्रा प्रतिबंध:** यात्रा केवल गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब तक ही सीमित है और इस स्थल से आगे यात्रा की अनुमति नहीं है।

करतारपुर कॉरिडोर समझौते के बारे में :

- **हस्ताक्षर तिथि:** प्रारंभिक समझौते पर 24 अक्टूबर, 2019 को हस्ताक्षर किए गए।
- **उद्देश्य:** इसका प्राथमिक उद्देश्य भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए गुरुद्वारा साहिब तक आसान पहुँच को सुगम बनाना है। दरबार साहिब करतारपुर, पाकिस्तान के नारोवाल में स्थित है।
- **कॉरिडोर के विषय में:** करतारपुर कॉरिडोर 4.7 किलोमीटर (2.9 मील) लंबा एक वीजा-मुक्त क्रॉसिंग है, जोकि पाकिस्तान के दरबार साहिब गुरुद्वारा को भारत के डेरा बाबा नानक से जोड़ता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

- करतारपुर कॉरिडोर का विचार पहली बार 1999 में भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रस्तावित किया गया था, जब दिल्ली-लाहौर बस कूटनीति के दौरान उन्होंने पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज

शरीफ के साथ चर्चा की।

- इस प्रस्ताव को वास्तविकता में बदलने के प्रयासों के तहत 2018 में, भारत और पाकिस्तान ने करतारपुर साहिब कॉरिडोर के निर्माण के लिए ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किए। अंततः यह गलियारा आधिकारिक रूप से 12 नवंबर, 2019 को गुरु नानक की 550वीं जयंती के अवसर पर खोला गया, जो सिख समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटना है।

महत्व:

- करतारपुर कॉरिडोर सिख श्रद्धालुओं के लिए सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें गुरु नानक की जन्मस्थली तक आसानी से पहुँचने में सहायता करता है।
- राजनीतिक दृष्टिकोण से, इस कॉरिडोर को भारत और पाकिस्तान के बीच एक पुल के रूप में देखा जाता है, जोकि शांति की दिशा में एक कदम है और दोनों देशों के बीच लंबे समय से चले आ रहे तनाव को कम करने में सहायक है।

निष्कर्ष:

करतारपुर कॉरिडोर समझौते का नवीनीकरण अंतरधार्मिक संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए एक सकारात्मक विकास है, जोकि सिख तीर्थयात्रियों को उनकी विरासत से सार्थक जुड़ाव प्रदान करता है। यह कॉरिडोर आध्यात्मिक यात्राओं को सुगम बनाकर इस विचार को पुष्ट करता है कि साझा सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्य राष्ट्रों के बीच समझ और सहयोग को बढ़ावा दे सकते हैं।

पॉवर पैक्ड न्यूज

नेपाल की स्वदेशी भाषाओं में समाचार सेवाओं का विस्तार

- नेपाल की राज्य समाचार एजेंसी राष्ट्रीय समाचार समिति (आरएसएस) ने मैथिली, अवधी, भोजपुरी और थारू भाषाओं में समाचार सेवाएँ शुरू की हैं, जिससे विविध भाषाई समुदायों के लिए सूचना तक पहुँच बढ़ेगी।
- इस पहल का उद्घाटन संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री ने किया और यह मंत्रालय के 100-दिवसीय लक्ष्यों के अनुरूप है और बहुभाषावाद को बढ़ावा देकर नेपाल की संघीय संरचना के प्रति प्रतिबद्धता को पुष्ट करता है।
- इसके अलावा, नेपाल के सबसे पुराने दैनिक समाचार पत्र गोरखापत्र ने रणथरू भाषा को समर्पित एक पेज पेश किया।
- भारत में, मैथिली, अवधी और भोजपुरी प्रमुख क्षेत्रीय भाषाएँ हैं जो मुख्य रूप से बिहार और उत्तर प्रदेश में बोली जाती हैं, जो भारत की समृद्ध भाषाई विविधता में योगदान देती हैं। स्वदेशी थारू लोगों द्वारा बोली जाने वाली थारू, तराई क्षेत्र में प्रचलित है।
- ये भाषाएँ साझा परंपराओं, रीति-रिवाजों और इतिहास को प्रतिबिंबित करती हैं, समुदायों के बीच संबंधों को मजबूत करती हैं और क्षेत्रीय पहचान को बढ़ावा देती हैं, जिससे भारत और नेपाल दोनों का सांस्कृतिक परिदृश्य समृद्ध होता है।

जंपिंग स्पाइडर (मकड़ी) की नई प्रजाति

- दक्षिण भारत में जंपिंग स्पाइडर की एक नई प्रजाति, तेनकाना जयमंगली की खोज की गई है। इससे पहले पश्चिमी घाट से जंपिंग स्पाइडर (मकड़ियों) की दो नई प्रजातियों की खोज की गई थी।
- तेनकाना नाम कन्नड़ शब्द 'दक्षिण' से आया है, क्योंकि यह प्रजाति दक्षिणी भारत और उत्तरी श्रीलंका में पाई जाती है।

- नई खोजी गई प्रजाति, तेनकाना जयमंगली, का नाम कर्नाटक में जयमंगली नदी के नाम पर रखा गया है, जहाँ इसे पहली बार खोजा गया था।
- तेनकाना मकड़ियाँ जंपिंग स्पाइडर की प्लेक्सिपिना उप-जनजाति से संबंधित हैं और ये हाइलस और टेलामोनिया जैसे समूहों से अलग हैं।
- ये मकड़ियाँ अपने जंगल में रहने वाले संबंधित प्रजातियों के विपरीत, शुष्क, जमीनी स्तर के आवासों को पसंद करती हैं। वे तमिलनाडु, पुडुचेरी, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में पाई गई हैं। जूकीज पत्रिका में प्रकाशित शोध, आनुवंशिक अध्ययनों और शारीरिक परीक्षणों पर आधारित था। हाल ही में खोजी गयी दो प्रजातियां जोकि पहले कोलोपसस वंश का हिस्सा थीं, अब तेनकाना के अंतर्गत पुनर्वर्गीकृत कर दी गई हैं।

प्रबोवो सुबियांतो बने इंडोनेशिया के राष्ट्रपति

- प्रबोवो सुबियांतो ने 20 अक्टूबर 2024 को इंडोनेशिया के आठवें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। वे दुनिया के तीसरे सबसे बड़े लोकतंत्र और सबसे अधिक आबादी वाले मुस्लिम बहुल देश के प्रमुख बने है। प्रबोवो, जो पूर्व विशेष बल कमांडर हैं, ने चुनाव में लगभग 60% वोट प्राप्त किए।
- उनकी प्रमुख नीतियों में स्कूली बच्चों के लिए मुफ्त भोजन की योजना शामिल है। उन्होंने अपने मंत्रिमंडल में 48 मंत्री और 58 उप-मंत्री नियुक्त किए।
- प्रबोवो का कार्यकाल जोको विडोडो (जोकोवी) के दस वर्षों से अधिक के शासन का अंत है, जिन्होंने इंडोनेशिया के आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे को मजबूत प्रदान किया है।
- प्रबोवो के नेतृत्व में इंडोनेशिया से आर्थिक सुधार और सामाजिक कल्याण की नीतियों में सुधार की उम्मीद की जा रही है।
- इंडोनेशिया दक्षिण-पूर्व एशिया और ओशिनिया के बीच स्थित है। यह दुनिया का सबसे बड़ा द्वीपसमूह है, जिसमें 17,000 से अधिक द्वीप शामिल हैं। इसकी राजधानी जकार्ता है और इसकी मुद्रा इंडोनेशियाई रुपिया है।

सुर्खियों में स्थान

दार एस सलाम

आईएनएस सुवर्णा, अदन की खाड़ी में अपनी एंटी-पायरेसी तैनाती के दौरान, 19 से 21 अक्टूबर, 2024 तक तंजानिया के दार एस सलाम बंदरगाह पर रुकी।

दार एस सलाम के बारे में:

- हिंद महासागर के तट पर स्थित दार एस सलाम तंजानिया का सबसे बड़ा शहर और आर्थिक राजधानी है। यह एक महत्वपूर्ण बंदरगाह और व्यापार केंद्र रहा है, जिसने पूर्वी अफ्रीका और वैश्विक बाजार के बीच व्यापार और संपर्क को सरल बनाया है।
- शहर का रणनीतिक स्थान इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे यह क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य का एक प्रमुख केंद्र बन गया है।
- तंजानिया की सीमा कई देशों से लगती है: उत्तर में युगांडा और केन्या, दक्षिण में मोजाम्बिक और पश्चिम में कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य।
- रुफिजी नदी तंजानिया में स्थित है और यह देश की सबसे बड़ी तथा सबसे लंबी नदी मानी जाती है। यह नदी किलोमबेरो और लुवेगु नदियों के संगम से बनती है।